thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 23 19 से 25 जून, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 टा. कृ. 07

सावधान
आर्य समाज को सम्प्रदाय बनाने वालों!

महर्षि दयानन्द की भावना का अन्तरात्मा से पालन करना हम सब आर्यों का पुनीत कर्त्तव्य।

- स्वामी अग्निवेश

स्वामी दयानन्द किसी नवीन संस्था का सूत्रपात करने के लिए बहुत अधिक तत्परता दिखाने या जल्दबाजी प्रदर्शित करना अनुचित समझते थे। ब्रह्म समाज के आन्दोलन में उत्पन्न हुई फूट तथा उसके विघटन को वे कलकत्ता में अपनी आंखों से देख चुके थे। वे यह अनुभव करते थे कि किसी प्रकार के सुदृढ़ सैद्धान्तिक आधार के अभाव में इस प्रकार के आन्दोलन एक सामायिक लहर के रूप में उभरते हैं और समय आने पर स्वत: ही समाप्त भी हो जाते हैं। अत: वे फूंक-फूंककर कदम उठाने के पक्षपाती थे। फिर वे यह भी चाहते थे कि उनके द्वारा प्रवर्तित यह धर्मान्दोलन किसी व्यक्ति या आचार्य के प्रति एकान्त एवं अनन्य निष्ठा या आस्था को लेकर ही नहीं चले। वे स्वयं को भी वैदिक धर्म के प्रचार के लिए उत्सर्गीकृत तथा समर्पित मानते थे। अत: उन्होंने आर्य समाज की विधिवत स्थापना से पूर्व अपने भक्तों और अनुयायियों के समक्ष अपनी स्वयं की स्थिति को स्पष्ट करते हुए अत्यन्त मार्मिक एवं भावपूर्ण स्वर में कहा -

"भाई, हमारा कोई स्वतंत्र मत नहीं है। मैं तो वेद के अधीन हूं और हमारे भारत में पच्चीस कोटि आर्य हैं। कई-कई बात में किसी-किसी में कुछ-कुछ भेद है, सो विचार करने से आप ही छूट जायेगा। मैं संन्यासी हूं और मेरा कर्त्तव्य यही है कि जो आप लोगों का अन्न खाता हूं इसके बदले जो सत्य समझता हूं उसका निर्भयता से उपदेश करता हूं। मैं कुछ कीर्ति का रागी नहीं हूं। चाहे कोई मेरी स्तुति करे वा निन्दा करे, मैं अपना कर्त्तव्य समझ के धर्म बोध कराता हूं। कोई चाहे माने वा न माने, इसमें मेरी कोई हानि लाभ नहीं है।

महाराज के इस स्पष्ट कथन को सुनकर जब एक सज्जन ने पूछा कि यदि हम समाज संस्थापित करें तो क्या इससे कोई सार्वजनिक हानि होगी?इसके उत्तर में स्वामी जी ने कहा -

"आप यदि समाज से पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हो, समाज कर लो। इसमें मेरी कोई मनाई नहीं है। परन्तु इसमें यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे गड़बड़ाध्याय हो जायेगा। मैं तो जैसा अन्य को उपदेश देता हूं वैसा ही आपको भी करूंगा और इतना लक्ष्य में रखना कि मेरा कोई स्वतंत्र मत नहीं है। और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूं। इससे यदि कोई मेरी गलती आगे पाई जाय, युक्तिपूर्वक परीक्षा करके इसी को भी सुधार लेना। यदि ऐसा न करोगे तो आगे यह भी एक मत हो जायेगा, और इसी प्रकार से बाबा वाक्यं प्रमाणं" करके इस भारत में नाना प्रकार के मत-मतान्तर प्रचलित होके, भीतर-भीतर दुराग्रह रख के धर्मान्ध होके लड़के (लड़कर) नाना प्रकार की सद्विद्या का नाश करके यह भारतवर्ष दुर्दशा को प्राप्त हुआ है। इसमें यह भी एक मत बढ़ेगा। मेरा अभिप्राय तो है कि इस भारतवर्ष में नाना प्रकार के मत-मतान्तर प्रचलित हैं वो भी, वे सब वेदों को मानते हैं इससे वेदशास्त्र रूपी समुद्र में यह सब नदी नाव पुन: मिला देने से धर्म एक्यता होगी। और धर्म एक्यता से सांसारिक और व्यावहारिक सुधारणा होगी और इससे कला कौशल आदि सब अभीष्ट सुधार होके मनुष्य मात्र का जीवन सफल होके अन्त में अपना धर्म बल से अर्थ, काम और मोक्ष मिल सकता है।"

उपर्युक्त दोनों वक्तव्यों से स्वामी जी के समाज संस्थापना विषयक विचार स्फटिक तुल्य स्पष्ट हो जाते हैं। वे यह स्वीकार करके चलते हैं कि वेद से भिन्न उनका कोई अन्य मत नहीं है। उन्हें यह भी आशा थी कि यदि लोग विचार पूर्वक निश्चय करें तो साम्प्रदायिक मतभेद समाप्त हो सकते हैं। उनके चरित्र की उदात्तता तथा लोकहित के प्रति उनका समर्पण भाव तो इसी बात से झलकता है कि संन्यासी होने पर भी समाज में परोपजीवी के रूप में जीवित रहना उन्हें अभीष्ट नहीं था। न उन्हें यश की लिप्सा थी और न निन्दा अथवा स्तुति के प्रति ही उनका कोई राग विराग था। इसके साथ ही वे यह भी स्पष्ट कर देते हैं कि यदि वैदिक धर्म और संस्कृति की पुन: स्थापना के लिए किसी समाज की संस्थापना होती है, तो इस योजना से वे असहमत नहीं है। वे न तो अपने को सर्वज्ञ मानते हैं और न यह दावा करते हैं कि उनके कथन या चिंतन में कोई त्रुटि या स्खलन हो ही नहीं सकता। साथ ही वे यह आशा रखते हैं कि वेदों के प्रति सभी मत, सम्प्रदायों की समान रूप से निष्ठा होने के कारण वैदिक मान्यताओं के आधार पर धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता का वितान ताना जा सकता है। यह व्यापक ऐक्य भाव ही पुरुषार्थ चतुष्टय का साधक है।

इस प्रकार जब आर्य समाज की स्थापना को लेकर भक्तजनों में व्यापक सहमति देखी गई, तो राजमान् राजश्री पानाचंद आनन्दजी पारेख को आर्य समाज के नियमों का प्रारूप बनाने के लिए कहा गया। यह प्रारूप स्वामी जी के समक्ष रक्खा गया, जिसमें उन्होंने समुचित संशोधन कर दिये। पश्चात् चैत्र शुक्ला पंचमी 1932 वि. शनिवार, तदनुसार 10 अप्रैल 1875 (शकाब्द 1797) को गिरगांव मुहल्ले में प्रार्थनासमाज के निकट एक पारसी सज्जन डॉ. माणेक जी अदेरजी की वाटिका में सायंकाल साढ़े पांच बजे एक सभा आयोजित कर आर्य समाज की विधिवत स्थापना की गई। प्रारम्भ में आर्य समाज के 28 नियम स्वीकार हुए जिनमें धार्मिक सिद्धान्तों के साथ-साथ समाज संचालन के व्यावहारिक विधान को भी सम्मिलित कर लिया गया था। स्वयं स्वामी दयानन्द ने इन नियमों की व्याख्या हिन्दी में की थी। प्रारम्भिक नियमों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि आर्य समाज के कार्य संचालनार्थ बनाया गया यह संविधान अत्यन्त व्यापक आधार लिये हुए हैं। मानव जीवन के सर्वविध हित, कल्याण तथा उत्थान के कुछ स्वर्णिम सूत्रों को इन नियमों में ग्रंथित किया गया है।

- 3/5 शंकर कॉलोनी, श्री गंगानगर

- डॉ. भवानी लाल भारतीय द्वारा लिखी पुस्तक "नव जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती" से साभार

आर्य गौरव

यदि आप अपने आर्य समाज की गतिविधियों में संस्था के संचालन में महर्षि दयानन्द की उपरोक्त भावना का सम्मान करते हुए समाज परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं तो अपने कार्यों तथा गतिविधियों की एक आधिकारिक रिपोर्ट चित्रों के साथ हमें निम्न ई-मेल पर :- sarvadeshikarya@gmail.com भेजें। आगामी अंकों में हम एक-एक करके आपकी रिपोर्ट प्रकाशित करेंगे और सार्वदेशिक सभा की वैबसाइट पर भी उसे डालेंगे। **- सम्पादक**

ई-मेल धारकों के लिए खुशखबरी

5 जून को सारे विश्व "विश्व पर्यावरण दिवस" मनाया गया। भारत में पर्यावरण को दूषित करने के लिए लोगों ने कमर कस रखी है और उसका निदान खोजने का प्रयास केवल कागजों और भाषणों तक ही सीमित होकर रह गया है। पर्यावरण को प्रदूषित करने में अन्य बातों के अतिरिक्त नित्य प्रति लाखों की संख्या में प्रकाशित हो रही पत्र-पत्रिकाओं की भी बड़ी अहम भूमिका है। इसमें कागज, रंग, कैमिकल्स तथा कई अन्य प्रकार की चीजों से हम निरन्तर प्रदूषण फैला रहे हैं।

"विश्व पर्यावरण दिवस" के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने एक महत्त्वपूर्ण पहल करते हुए यह निश्चय किया है कि "वैदिक सार्वदेशिक" पत्रिका अब पाठकों को नि:शुल्क रूप में ई-मेल द्वारा भेजी जायेगी। उन्होंने आम जनता से अपील की है कि इसके लिए वे अपना, अपने मित्रों का तथा सम्बन्धियों का ई-मेल सभा कार्यालय को अधिक से अधिक संख्या में भेजें जिससे अधिक से अधिक लोग इस नि:शुल्क सेवा का लाभ उठा सकें। स्वामी जी ने प्रकाशकों से अपील की है कि इस प्रकार के कदम उठाकर वे पर्यावरण प्रदूषण को बहुत हद तक कम करने में अपना योगदान दे सकते हैं। कृपया इस पर गम्भीरता से विचार करें तथा अमल में लायें।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

सांसों में घुलते जहर की फिक्र करें

तेज विकास की जिस नीति ने बड़े-बड़े शहर बनाए हैं, वही इन्हें वीरानी की ओर ले जा रही है

- शशांक द्विवेदी

पिछले दिनों विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की एक रिपोर्ट के अनुसार देश की राजधानी दिल्ली का वातावरण बेहद जहरीला हो गया है। इसकी गिनती विश्व के सबसे अधिक प्रदूषित शहर के रूप में होने लगी है। वायु प्रदूषण रोकने के लिए अगर जल्दी कदम नहीं उठाए गए तो इसके गंभीर परिणाम सामने आयेंगे। डब्ल्यूएचओ ने वायु प्रदूषण को लेकर 91 देशों के 1600 शहरों पर डाटा आधारित अध्ययन रिपोर्ट जारी की है। सबसे ज्यादा चिंता हवा में मौजूद सूक्ष्म कणों (पार्टिकुलेट मैटर अथवा पीएम) को लेकर जताई गई है। ये कण फेफड़ों को सीधा नुकसान पहुंचाते हैं।

एक पीएम ऐसा भी

दिल्ली की हवा में पीएम 25 (2.5 माइक्रॉन के आकार वाला छोटा कण) सबसे ज्यादा पाया गया है। पीएम 25 की सघनता 153 माइक्रोग्राम तथा पीएम 10 की सघनता 286 माइक्रोग्राम तक पहुंच गई है जो स्वास्थ्य के लिए बेहद खतरनाक है। दिल्ली के मुकाबले पेइचिंग में पीएम 25 की सघनता 56 तथा पीएम 10 की 121 माइक्रोग्राम है। गौरतलब है कि कुछ वर्ष पहले तक पेइचिंग का जिक्र दुनिया के सबसे प्रदूषित शहर के रूप में होता था। चीन की सरकार ने इस समस्या को दूर करने के लिए कई प्रभावी कदम उठाए, जिनके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

एक अध्ययन के मुताबिक वायु प्रदूषण भारत में मौत का पांचवाँ बड़ा कारण है। हवा में मौजूद पीएम 25 और पीएम 10 जैसे छोटे कण सोते-जागते लगातार मनुष्य के फेफड़े में पहुंच कर वहीं जमते जाते हैं। इससे सांस और हृदय संबंधी बीमारी होने का खतरा बढ़ जाता है। इनके अलावा इससे फेफड़े का कैंसर भी हो सकता है। दिल्ली में वायु प्रदूषण बढ़ने का मुख्य कारण वाहनों की बढ़ती संख्या है। इसके साथ ही थर्मल पावर स्टेशनों और पड़ोसी राज्यों में स्थित ईंट भट्ठों से भी दिल्ली में प्रदूषण बढ़ रहा है।

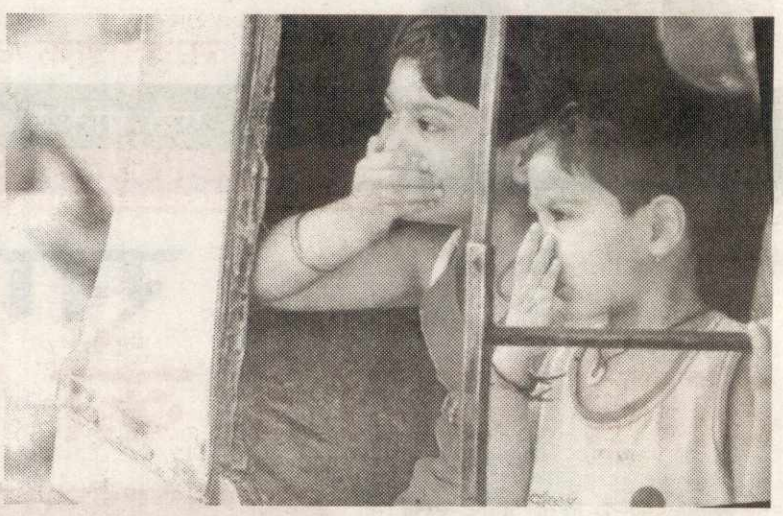

विश्व स्वास्थ्य संगठन का नया अध्ययन बताता है कि हम वायु प्रदूषण की समस्या दूर करने को लेकर कितने लापरवाह हैं और यह समस्या कितनी विकट होती जा रही है। खास बात यह है कि यह समस्या सिर्फ दिल्ली में नहीं, बल्कि देश के लगभग सभी शहरों की हो गई है। अगर हालात नहीं सुधरे तो वह दिन दूर नहीं, जब शहर रहने लायक नहीं बचेंगे। जो लोग विकास, तरक्की और रोजगार की वजह से गांवों से उठकर शहरों की तरफ आ गए हैं, उन्हें फिर से गांवों की तरफ रुख करना पड़ेगा।

स्वच्छ वायु सभी मनुष्यों, जीवों और वनस्पतियों के लिए अत्यंत आवश्यक है। मनुष्य दिन भर में जो कुछ ग्रहण करता है उसका 80 प्रतिशत भाग वायु है। प्रतिदिन मनुष्य 22000 बार सांस लेता है। इस प्रकार प्रत्येक दिन में वह 16 किलोग्राम या 35 गैलन वायु ग्रहण करता है। वायु विभिन्न गैसों का मिश्रण है जिसमें नाइट्रोजन की मात्रा सर्वाधिक 78 प्रतिशत होती है जबकि ऑक्सीजन 21 प्रतिशत और कार्बन डाइ ऑक्सीजन 0.03 प्रतिशत पाई जाती है। शेष 0.97 प्रतिशत में हाइड्रोजन, हीलियम, आर्गन, निऑन, क्रिप्टन, जेनान, ओजोन तथा जल वाष्प होती है। वायु में विभिन्न गैसों की उपरोक्त मात्रा उसे संतुलित बनाए रखती है। इसमें जरा-सा भी अंतर आने पर वायु असंतुलित हो जाती है और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित होती है।

पर्यावरण की दृष्टि से भारत को विश्व के सातवें सबसे अधिक खतरनाक देश के रूप में स्थान दिया गया है। वायु शुद्धता का स्तर भारत के मेट्रो शहरों में पिछले 20 वर्षों में बहुत ही खराब रहा है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार हर साल लाखों लोग खतरनाक प्रदूषण के कारण मर जाते हैं। वास्तविकता यह है कि पिछले 18 वर्षों में जैविक ईंधन के चलते कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन 40 प्रतिशत तक बढ़ चुका है, जबकि पृथ्वी का तापमान 0.7 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा है। अगर यही स्थिति रही तो 2030 तक पृथ्वी के वातावरण में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा अभी की तुलना में लगभग दोगुनी हो जायेगी।

पर्यावरण असंतुलन और विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से बचने का बस एक ही मंत्र है कि विश्व में सह अस्तित्व की संस्कृति कायम की जाए। सह अस्तित्व, यानी प्रकृति को उसके वास्तविक रूप में बचाए रखते हुए मानव जाति का विकास। अभी की स्थिति में प्रकृति और मनुष्य, दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे पर निर्भर है। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का क्षय न हो, ऐसे संकल्प और ऐसी ही व्यवस्था की जरूरत है। इस सिद्धान्त को अभी पूरे विश्व ने, खासतौर पर विकसित देशों ने विकासवाद की अंधी दौड़ की वजह से भुला रखा है।

एजेंडे में तो आए

पर्यावरण असंतुलन दशकों से मानव जाति के लिए चिंता का सबब रहा है। लेकिन, दुर्भाग्य से यह हमारे राजनीतिक एजेंडे में शामिल नहीं है। हाल में हुए लोकसभा चुनावों में अधिकांश राजनीतिक दलों ने अपने घोषणापत्र में पर्यावरण संबंधी किसी भी मुद्दे को जगह देना जरूरी नहीं समझा। देश में हर जगह, हर तरफ हर पार्टी विकास की बातें करती है, लेकिन ऐसे विकास का क्या फायदा जो लगातार विनाश को आमंत्रित करता हो। प्रदूषण रोकने के लिए किसी भी सरकार ने गंभीर प्रयास नहीं किए। जो प्रयास किए गए वे नाकाफी साबित हुए और यह संकट बढ़ता ही गया। इसे रोकने के लिए अब ठोस प्रयासों की दरकार है।

- नवभारत टाइम्स से साभार

पर्यावरण असंतुलन दशकों से मानव जाति के लिए चिंता का सबब रहा है। लेकिन, दुर्भाग्य से यह हमारे राजनीतिक एजेंडे में शामिल नहीं है। हाल में हुए लोकसभा चुनावों में अधिकांश राजनीतिक दलों ने अपने घोषणापत्र में पर्यावरण संबंधी किसी भी मुद्दे को जगह देना जरूरी नहीं समझा। देश में हर जगह, हर तरफ हर पार्टी विकास की बातें करती है, लेकिन ऐसे विकास का क्या फायदा जो लगातार विनाश को आमंत्रित करता हो। प्रदूषण रोकने के लिए किसी भी सरकार ने गंभीर प्रयास नहीं किए। जो प्रयास किए गए वे नाकाफी साबित हुए और यह संकट बढ़ता ही गया। इसे रोकने के लिए अब ठोस प्रयासों की दरकार है।

गुरुकुल खेड़ा खुर्द में प्रवेश प्रारम्भ

दिल्ली प्रदेश की प्रसिद्ध संस्था 'गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-82 में कक्षा 5वी, 6वीं व 7वीं और 8वीं में प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

- आचार्य सुधांशु, मो.:-9350538952, 8800443826

गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-82 में अध्यापक की आवश्यकता

श्री मद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-82 में कक्षा 6 से लेकर 12वीं तक अंग्रेजी विज्ञान एवं संस्कृत व्याकरण पढ़ाने वाले अध्यापकों की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें।

- आचार्य सुधांशु, मो.:-9350538952,8800443826

आर्य समाज अमर कालोनी का चुनाव

श्री जितेन्द्र कुमार डाबर - प्रधान
श्री ओम प्रकाश छावड़ा - मन्त्री
श्री वेद भूषण मलिक - कोषाध्यक्ष

शुभ सूचना

समस्त आर्य समाजों, आर्य परिवारों व आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि वेद कथा, वेद ज्ञान प्रचार, वैदिक संस्कार कराने तथा बृहद् यज्ञ कराने हेतु स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती से सम्पर्क कर सकते हैं।

09868720739
09897180196

निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहद् यज्ञ सोमवार 23 जून से रविवार 29 जून, 2014 तक

यज्ञ ब्रह्मा - स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
योग निर्देशक - आचार्य राजहंस मैत्रेय, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़
आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण - योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स, बहादुरगढ़

जीवन रूपान्तरण के लिए स्वर्णिम अवसर

प्रवक्ता - डॉ. राजकुमार (जिला शिक्षाधिकारी दिल्ली), श्री आजाद सिंह (पूर्व प्राचार्य नेहरू कॉलेज झज्जर), आर्य तपस्वी सुखदेव जी (दिल्ली), आचार्य खुशीराम जी (दिल्ली), आचार्य रविशास्त्री (आश्रम)

भजनोपदेशक - मा. विश्वमुनि जी (आश्रम बाछौद), श्री धनीराम जी बेधड़क, संगीताचार्य लक्ष्मणानन्द रामानन्द (नरेला), पं. रमेशचन्द्र जी कौशिक (झज्जर), योगसाधिका रामदुलारी बंसल और आश्रम के ब्रह्मचारी।

दिनचर्या - सोमवार 23 जून, 2014 को शिविर उद्घाटन सायं 4 बजे मंगलवार 24 जून, 2014 प्रातः 5 से 7 बजे तक ध्यान योग साधना पश्चात् आसन प्राणायाम प्रशिक्षण 7.30 बजे से 10 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश, 11 बजे से 12.30 बजे तक योग दर्शन स्वाध्याय, शंका समाधान। मध्यांहनोपरान्त 4 बजे से 6 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश तथा साधना रात्रि 8.30 बजे से 9.30 बजे तक शंका समाधान व मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन।

नोट - शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान कॉपी, पेन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आएं। भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है।

संयोजक :- वानप्रस्थी ईशमुनि, मो.:-9812640989

thearyasamaj.org

दान

– ब्रजेन्द्र श्रीवास्तव

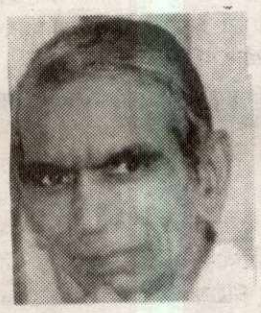

वह इकतारा गुंजाता और गाता हुआ घर के सामने से निकल रहा था, गायन वादन में लय और ताल के साथ स्वर में अक्खड़पना होते हुए भी कर्णप्रियता थी। इसलिए बगीचे में काम करते-करते रुक गया। ध्यान देकर सुना :

सबद निरन्तर से मन लागा,
मलिन वासना त्यागी,
उठत-बैठत कबहुँ न छूटै
ऐसी तारी लागी।

सोचा यह कबीर की साखी लगती है। आगे उसने गाया – कहै कबीर यह उनमुनि रहनी.... तो सहसा निर्गुण कबीर को साकार करने वाले कुमार गन्धर्व याद आ गए। वाह! इसे कुछ दिया जाए – बीस रुपये, घर के भीतर गया सोचा बीस बहुत हैं दस ठीक हैं, कहीं रोज-रोज आ खड़ा हुआ तो?और जब उसके दान पात्र में डाला तो वह था पाँच रुपये का सिक्का। ऐसा क्यों हुआ कि बीस रुपये का विचार पाँच रुपये में पूरा हुआ?पर ऐसा अक्सर ही होता है। मैं शर्त तो नहीं लगाता पर बहुत संभव है, आपके साथ भी ऐसा होता होगा कि किसी याचक को देखकर जितनी वस्तु, अन्न या पैसा आप देने का विचार एकदम से करते हैं उसमें दान देते-देते कमी आ ही जाती है। दान में बढ़ोतरी कम ही होती है।

दान की तात्कालिक मनोवृत्ति पर कर्ण का एक प्रसंग है जो हमारी दानघटाऊ मनोवृत्ति की पुष्टि करता है। एक सुबह कर्ण स्नानपूर्व तेल मर्दन कर रहे थे, बाएँ हाथ में वह स्वर्ण का रत्नजटित तेल पात्र लिए थे और उसमें से तेल लेकर दाएं हाथ से शरीर में लगा रहे थे। इतने में एक याचक उपस्थित हुआ, कर्ण के समक्ष उस समय कोषाध्यक्ष उपस्थित नहीं था इसलिए कर्ण ने उस याचक को तत्काल तेल से भरा वह स्वर्णपात्र बाएं हाथ से ही भेंट कर दिया। इस पर याचक ने सविनय यह प्रश्न किया कि – 'हे दानवीर अंगराज! आप धर्म और सदाचार के ज्ञाता हैं फिर भी आपने बाएं हाथ से दान कैसे दे दिया?क्योंकि नीति यह कहती है कि समस्त धर्म-कार्य दक्षिण हाथ से ही सम्पन्न करने चाहिए।' इस पर कर्ण ने कहा – 'हे द्विज श्रेष्ठ! बाएँ हाथ में स्वर्णपात्र को दाएं हाथ से लेने में कुछ समय तो लगता ही, इसी अल्प समय में ही मेरे मन में यह विचार आ सकता था कि रत्नजटित यह स्वर्णपात्र तो बहुमूल्य है, कुछ स्वर्ण मुद्राएं ही पर्याप्त रहेंगी। दान की सात्विक वृत्ति चित्त में बहुत ही अल्प समय के लिए ठहर पाती है इसलिए मैंने चित्त में सद्वृत्ति के रहते तत्काल दान करना उचित समझा और बाएं हाथ से ही दान दे दिया है।'

ऐसा क्यों होता है कि अच्छे विचार, दान और परोपकार की भावना, वैर-द्वेष भुलाकर मित्रता का इरादा, दूसरों को क्षमा कर देने की इच्छा एक तरंग की तरह आती है तो दुबारा कम ही लौटती है। मनीषियों ने इसका एक कारण यह माना है कि मन की गति और जल की गति ऊँचे से नीचे की तरफ जाने की होती है। सांख्य दर्शन में जल की प्रकृति सत्त्व और तम इन दो गुणों का मिश्रण मानी गई है। सत्व गुण उर्ध्वगामी है जबकि तमोगुण अधोगामी। यही कारण है कि हमारा मन थोड़ी देर के लिए ऊँचे परोपकारी विचारों पर जाता तो है पर वहाँ की ऊँचाई से तुरन्त हटकर अपने स्वार्थ के निचले स्तर की तरफ चलने लगता है। ग्रीक दार्शनिकों ने वायु और अग्नि को ऊपर की ओर बढ़ने वाला उर्ध्वमुखी और जल व पृथ्वी को नीचे की तरफ बढ़ने वाला माना है। सुश्रुत ने आयुर्वेद में भी जल को सत्व और तम का मिश्रण माना है इसलिए मनुष्य का मन:शरीर रचना की दृष्टि से मन की वृत्ति या तौर-तरीका अच्छे विचारों से हटकर निकृष्ट विचारों की तरफ सहज ही जाने का रहता है, आधुनिक मनोविज्ञान इस मानसिक प्रवृत्ति को इतने स्पष्ट रूप से अभी डिफाइन नहीं कर पाया है।

ऐसा क्यों होता है कि अच्छे विचार, दान और परोपकार की भावना, वैर-द्वेष भुलाकर मित्रता का इरादा, दूसरों को क्षमा कर देने की इच्छा एक तरंग की तरह आती है तो दुबारा कम ही लौटती है। मनीषियों ने इसका एक कारण यह माना है कि मन की गति और जल की गति ऊँचे से नीचे की तरफ जाने की होती है। सांख्य दर्शन में जल की प्रकृति सत्त्व और तम इन दो गुणों का मिश्रण मानी गई है। सत्व गुण उर्ध्वगामी है जबकि तमोगुण अधोगामी। यही कारण है कि हमारा मन थोड़ी देर के लिए ऊँचे परोपकारी विचारों पर जाता तो है पर वहाँ की ऊँचाई से तुरन्त हटकर अपने स्वार्थ के निचले स्तर की तरफ चलने लगता है।

प्रयत्न तो मन को ऊँचा उठाने के लिए सद्वृत्तियों की ओर ले जाने के लिए ओर वहीं बनाए रखने के लिए हमको करना होगा?वही जो हम जल को निचले स्तर से ऊपर के स्तर तक पहुँचाने के लिए करते हैं – हम बिजली की, पानी को ऊपर फेंकने वाली, मोटर अर्थात् बूस्टर पम्प लगाते हैं। अपने मन की वृत्तियों को ऊपर उठाने और उन्हें सतत उर्ध्वगामी बनाए रखने के लिए हमें अपनी इच्छाशक्ति को संकल्प से उसी तरह जोड़ना होगा जैसे हम विद्युत शक्ति को जल के पम्प से जोड़ते हैं- हमें अपना मन शुभ संकल्पमय बनाना होगा। यजुर्वेद में जो बार-बार प्रार्थना की गई है – 'मेरा मन शुभ संकल्पवान बने – तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु', वह इसीलिए तो की गई है।

दान में कौन कितना आगे?दान पर आज विश्वव्यापी सर्वेक्षण हो रहे हैं कि कौन सा देश कितना धन या समय परोपकार में देता आ रहा है। इसमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से लेकर आम नागरिक, सभी शामिल किए गए हैं। इस सर्वे के अनुसार अमेरिकी कम्पनियाँ और

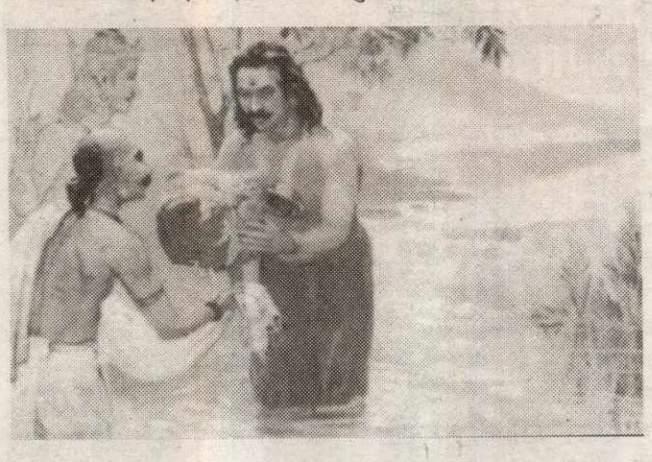

नागरिक दोनों ही, धन व समय परोपकार में लगाने में सबसे आगे हैं। जबकि भारत धर्म आध्यात्म प्रधान होने के दावे के बावजूद दानधर्म के कार्य में बहुत पीछे हैं। वास्तविकता भी यही है कि भारत में दान पर बहुत जोर धर्मग्रन्थों में तो दिया गया है पर व्यवहार में दान परोपकार एक औपचारिकता मात्र दिखाई देता है। भारत में दान परोपकार की भावना में गिरावट आने का एक बड़ा कारण है यहाँ के धर्म-ध्वज वाहकों का अर्थात् मठ, मंदिर, पुरोहित वर्ग का व्यवहार आचरण एकतरफा होता है। ये सब दान तो खूब लेते हैं, पर दान को समाज को लौटाने में कोई अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते नहीं दिखाई देते। भारत के सर्वाधिक धन सम्पन्न उत्तर व दक्षिण के मंदिरों व मठों का, पीठाधीश्वरों का दान, परोपकार प्राकृतिक आपदा सहायता संबंधी व्यवहार किसी तरह प्रेरक मार्गदर्शक नहीं है। कुछ स्कूल, अस्पताल, धर्मशालाएं अन्न क्षेत्र या लंगर चलाना पर्याप्त नहीं है। इलेक्ट्रॉनिक चैनलों पर दर्शकों की यह जिज्ञासा कि जून 2013 में केदारनाथ उत्तराखण्ड के खण्ड प्रलय में अटूट धन सम्पन्न ऐसे कितने धर्म संस्थानों ने मदद की?आप यह नहीं कह सकते कि जिनका आधार ही दूसरों के दान पर टिका है वे दान क्यों करें?क्योंकि अपार सम्पत्ति जमा होने के कारण ही ऐसे धर्म संस्थानों में उत्तराधिकार या अधिकार को लेकर मुकदमे चलते हैं। आम जनता बड़े लोगों के आचरण के अनुसार ही व्यवहार करती है – 'महाजनो येन गता स: पन्था' जिस मार्ग पर महाजन बड़े लोग चलें वही मार्ग सभी को अनुकरणीय होता है। गिरधर कविराय ने इसलिए यह सलाह धनिक वर्ग को दी है कि जब घर में पैसा बढ़ जाए तो दोनों हाथों से दान देना चाहिए नहीं तो यह पैसा ले डूबता है। गिरधर कवि राय ने कहा है कि जैसे नाव में पानी भर जाने पर उसमें बैठे लोग पानी को दोनों हाथों से बाहर उलीचते हैं, ताकि नाव डूबे नहीं। उसी तरह धन को दान के माध्यम से बाहर निकालते रहने पर ही अधिक धन से होने वाले दुर्गुणों से बचा जा सकता है।

जो व्यक्ति अपनी पत्नी, बच्चे और वृद्धजनों का पालन नहीं करते हुए दान करते हैं उन्हें पुण्य के स्थान पर पाप ही मिलता है। व्यवहार में आप समाज में ऐसे बहुत से दानदाता देख सकते हैं जो अपने बीमार माता-पिता को भोजन पानी और दवा देने में झगड़ा करते हैं कि अब तुम्हारा नम्बर है दवा पानी देने का मैं कितना करूँ?फिर अपने स्वयं के बच्चों के लिए मंदिरों में दान करते हैं। इस मनोवृत्ति पर शास्त्र का कथन है कि जो व्यक्ति समर्थ होकर भी अपने स्वजनों को तो दुखी जीवन देता है, उनका पालन पोषण नहीं करता परन्तु परजनदाता बनता है दूसरों को दान देता है ऐसा दान मधु-मिश्रित विष समान अधर्म है।

वर्तमान में दान ही प्रधान धर्म या सामाजिक आचार है। काल के चार विभाजन सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग धर्म आचरण की बढ़ती-घटती स्थिति के आधार पर किए गए हैं। धर्म शब्द से भले ही सेक्यूलरवादी कुछ भी अर्थ निकालें, धर्म का व्यापक अर्थ सामाजिक आचरण ही है। महाभारत में भीम युधिष्ठिर से कहते हैं कि सभी शास्त्रों में आचार को प्रथम स्थान दिया गया है। इस आचार से ही धर्म बनता है। **'सर्व आगमानाम आचार: प्रथमं परिकल्पते, आचार प्रभवो धर्मो।'** इस धर्म आचरण के चार चरण हैं सत्य, यज्ञ, तप और दान। मतान्तर से यह सत्य ज्ञान यज्ञ और दान है। सतयुग में सत्य, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में तप और वर्तमान कलयुग में दान की प्रधानता मानी गई है। इसीलिए सन्त प्रवर तुलसी कहते हैं :-

प्रगट चारिपद धर्म के कलिमह एक प्रधान।
येन केन विधि दीने, दान करे कल्याण॥

दान की सीमा क्या हो? भागवत कथामर्मज्ञ डोंगरे महाराज ने आय का पाचवाँ भाग दान करने पर जोर दिया है, यह विभाजन उदार और धनी वर्ग के लिए ठीक लगता है। जबकि मनु ने आमदनी का दशमांश दान करने को कहा है। अर्थात् सौ रुपये आय पर 10 रुपये। इस्लाम में पूरे साल की आमदनी का एक प्रतिशत जकात अर्थात् दान-पुण्य पर खर्च करने का विधान किया गया है जिसे सभी आसानी से कर सकते हैं। ईसाइयों में भी चैरिटी पर अर्थात् दान पर बहुत जोर दिया गया है। सर्वस्वदान नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आजीविका नष्ट होने से दूसरों के आश्रित रहना पड़ता है, इसलिए शास्त्रों में इसे मना किया गया है। क्या निर्धन दान करें?निर्धन को दान नहीं करना चाहिए। इसके अलावा जो व्यक्ति अपनी पत्नी, बच्चे और वृद्धजनों का पालन नहीं करते हुए दान करते हैं उन्हें पुण्य के स्थान पर पाप ही मिलता है। व्यवहार में आप समाज में ऐसे बहुत से दानदाता देख सकते हैं जो अपने बीमार माता-पिता को भोजन पानी और दवा देने में झगड़ा करते हैं कि अब तुम्हारा नम्बर है दवा पानी देने का मैं कितना करूँ?फिर अपने स्वयं के बच्चों के लिए मंदिरों में दान करते हैं। इस मनोवृत्ति पर शास्त्र का कथन है कि जो व्यक्ति समर्थ होकर भी अपने स्वजनों को तो दुखी जीवन देता है, उनका पालन पोषण नहीं करता परन्तु परजनदाता बनता है दूसरों को दान देता है ऐसा दान मधु-मिश्रित विष समान अधर्म है।

क्या दान का मुहूर्त देखना चाहिए? मुहूर्त का अर्थ यदि दान लेने वालों व देने वाले को सर्वाधिक लाभ पहुंचाना है तो आपत्ति के समय धन, अन्न, जल, वस्त्र, औषधि, आश्रय आदि की तत्काल सहायता देना श्रेष्ठ है। ऐसे में पंचांग का मुहूर्त कोई नहीं देखना चाहेगा। जैसे सर्जरी इमरजेन्सी में तत्काल भी की जाती है और योजना बनाकर भी की जाती है वैसे ही दान के सम्बन्ध में समझना चाहिए। आपात् समय तत्काल दान के साथ-साथ योजना बनाकर तीर्थ, व्रत, पर्व पर दान करना एक तरह से मुहूर्त या प्रसंगवश दान करना ही है।

दान पर पलने की आलसी प्रवृत्ति गांवों में संयुक्त परिवार के दौर में घर के ऐसे संबंधी को जो घर का, बाहर का कुछ भी काम काज नहीं करते, अक्सर, मलूका सा घर में पड़े रहने वाला कहा जाता रहा है। यह मलूका कौन थे?यह थे सन्त मलूकदास जो यह मानते थे कि जो व्यक्ति पूरी तरह ईश्वर पर निर्भर हो जाता है उसकी देखभाल स्वयं राम करते हैं। सन्त मलूकदास कहते हैं।

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम॥

सन्त मलूक ने जब ऐसा कहा होगा तब उनका भाव शरणागति का था पर आलसी

शेष पृष्ठ 7 पर

thearyasamaj.org

समरस समाज से सशक्त राष्ट्र

- आर. एल. फ्रांसिस

वर्तमान समय में राजनीतिक सुविधा के हिसाब से हर कोई डॉ. अम्बेडकर को अपने-अपने तरीके से परिभाषित करने में लगा हुआ है, कुछ उन्हें देवता बनाने में लगे हैं तो कुछ उन्हें केवल वंचितों की धरोहर मानते हैं, कई हैं जो उन्हें हिन्दुओं के विरोधी नायक के रूप में रखते हैं। और तो और भारत के कुछ मार्क्सवादी उन्हें मार्क्स के अग्रदूत मानते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो अम्बेडकर के मत-परिवर्तन के सही मर्म को समझे बिना ही आज वंचितों को हिन्दुओं से अलग कर उन्हें एक मत के रूप में रखने की मांग करने लगे हैं।

लेकिन कोई इस पर बात नहीं करना चाहता कि डॉ. अम्बेडकर के चिन्तन और दृष्टि को समझने के लिए यह ध्यान रखना जरूरी है कि वे अपने चिन्तन में कहीं भी दुराग्रही नहीं है। उनके चिन्तन में जड़ता नहीं है। अम्बेडकर का दर्शन समाज को गतिमान बनाए रखने का है। विचारों का नाला बनाकर उसमें समाज को डुबाने वाला नहीं है। अम्बेडकर मानते थे कि समानता के बिना समाज ऐसा है, जैसे बिना हथियारों के सेना। समानता को समाज के स्थाई निर्माण के लिए धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक तथा अन्य क्षेत्रों में लागू करना आवश्यक है। डॉ. अम्बेडकर मानते थे कि धर्म के मूल्य जीवन के लिए उत्प्रेरक होते हैं, इसी कारण वे मार्क्सवाद के पक्ष में नहीं थे।

सामाजिक बदलाव के वाहक

भारत के सर्वांगीण विकास और राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण विषय हिन्दू समाज का सुधार एवं आत्म उद्धार है। हिन्दू धर्म मानव विकास और ईश्वर की प्राप्ति का स्रोत है। किसी एक पर अंतिम सत्य की मुहर लगाए बिना सभी रूपों में सत्य को स्वीकार करने, मानव विकास के उच्चतर सोपान पर पहुंचने की गजब की क्षमता है इसमें! श्रीमद्भगवद्गीता में इस विचार पर जोर दिया गया है कि व्यक्ति की महानता उसके कर्म से सुनिश्चित होती है न कि जन्म से। इसके बावजूद अनेक ऐतिहासिक कारणों से इसमें आई नकारात्मक चीजों, ऊँच-नीच की अवधारणा आदि इसका सबसे बड़ा दोष रहा है। यह अनेक सहस्राब्दियों से हिन्दू धर्म आधारित जीवन का मार्गदर्शन करने वाले सिद्धान्तों के भी प्रतिकूल है।

हिन्दू समाज ने अपने मूलभूत सिद्धान्तों का पुनः पता लगाकर तथा मानवता के अन्य घटकों से सीखकर समय-समय पर आत्मसुधार की इच्छा एवं क्षमता दर्शाई है। सैकड़ों सालों से वास्तव में इस दिशा में प्रगति हुई है। इसका श्रेय आधुनिक काल के संतों एवं समाज सुधारकों, यथा स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, राजा राममोहन राय, महात्मा ज्योतिबा फुले एवं उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले, नारायण गुरु, गांधीजी और डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर को जाता है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा इससे प्रेरित अनेक संगठन हिन्दू एकता एवं हिन्दू समाज के पुनरुत्थान के लिए सामाजिक समानता पर जोर दे रहे है। संघ के तृतीय सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस कहते थे, 'यदि अस्पृश्यता पाप नहीं है तो इस संसार में अन्य दूसरा कोई पाप हो ही नहीं सकता।' वर्तमान वंचित समुदाय, जो अभी भी हिन्दू है, अधिकांशतः उन्हीं साहसी ब्राह्मणों व क्षत्रियों का ही वंशज है, जिन्होंने जाति से बाहर होना स्वीकार किया किन्तु विदेशी शासकों द्वारा जबरन मत परिवर्तन स्वीकार नहीं किया।

हिन्दू समाज के इस सशक्तिकरण की यात्रा को डॉ. अम्बेडकर ने आगे बढ़ाया। उनका दृष्टिकोण न तो संकुचित था और न ही वे पक्षपाती थे। वंचितों को सशक्त करने और उन्हें शिक्षित करने का उनका अभियान एक तरह से हिन्दू समाज और राष्ट्र को सशक्त करने का अभियान था। उनके द्वारा उठाए गए सवाल जितने उस समय प्रासंगिक थे, वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, कि अगर समाज का एक बड़ा हिस्सा शक्तिहीन और अशिक्षित रहेगा तो हिन्दू समाज और राष्ट्र सशक्त कैसे हो सकता है?

वे बार-बार सवर्ण हिन्दुओं से आग्रह कर रहे थे कि विषमता की दीवारों को गिराओ, तभी हिन्दू समाज शक्तिशाली बनेगा। डॉ. अम्बेडकर का मत था कि जहां सभी क्षेत्रों में अन्याय, शोषण एवं उत्पीड़न होगा, वहीं सामाजिक न्याय की धारणा जन्म लेगी। आशा के अनुरूप उतर न मिलने पर उन्होंने 1935 में नासिक में यह घोषणा की कि वे हिन्दू नहीं रहेंगे। अंग्रेजी सरकार ने भले ही वंचित समाज को कुछ कानूनी अधिकार दिए थे, लेकिन अम्बेडकर जानते थे कि यह समस्या कानून की समस्या नहीं है। यह हिन्दू समाज के भीतर की समस्या है और इसे हिन्दुओं को ही सुलझाना होगा। वे समाज के विभिन्न वर्गों को आपस में जोड़ने का ही कार्य कर रहे थे।

अम्बेडकर ने भले ही हिन्दू न रहने की घोषणा कर दी थी। लेकिन ईसाइयत या इस्लाम से खुला निमंत्रण मिलने के बावजूद उन्होंने इन विदेशी मतों को स्वीकारना उचित नहीं माना। डॉ. अम्बेडकर इस्लाम और ईसाइयत अपना लेने वाले वंचितों की दुर्दशा को जानते थे। उनका मत था कि मतांतरण से राष्ट्र को नुकसान उठाना पड़ता है। विदेशी मतों को अपनाने से व्यक्ति अपने देश की परंपरा से टूटता है।

वर्तमान समय में देश और दुनिया में गलत धारणा बनाई जा रही है कि अम्बेडकर केवल वंचितों के नेता थे। उन्होंने केवल वंचितों के उत्थान के लिए कार्य किया। यह कहने में कोई संकोच नहीं कि उन्होंने भारत की आत्मा हिन्दुत्व के लिए कार्य किया। जब हिन्दुओं के लिए एक विधि संहिता बनाने का प्रसंग आया तो सबसे बड़ा सवाल हिन्दु को परिभाषित करने का था। डॉ. अम्बेडकर ने अपनी दूरदृष्टि से इसे ऐसे परिभाषित किया कि मुसलमान, ईसाई, यहूदी और पारसी को छोड़कर इस देश के सब नागरिक हिन्दू हैं, अर्थात् विदेशी उद्गम के मतों को मानने वाले अहिन्दू हैं, बाकी एक सब हिन्दू हैं। उन्होंने इस परिभाषा से देश की आधारभूत एकता का अद्भुत उदाहरण पेश किया।

अम्बेडकर की आर्थिक दृष्टि

अम्बेडकर का सपना भारत को महान, सशक्त और स्वावलंबी बनाने का था। डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि में प्रजातंत्र व्यवस्था सर्वोत्तम व्यवस्था है, जिसमें 'एक मानव एक मूल्य' का विचार है। सामाजिक व्यवस्था में हर व्यक्ति का अपना-अपना योगदान है, पर राजनीतिक दृष्टि से यह योगदान तभी संभव है जब समाज और विचार दोनों प्रजातांत्रिक हों। आर्थिक कल्याण के लिए आर्थिक दृष्टि से भी प्रजातंत्र जरूरी है।

आज लोकतांत्रिक और आधुनिक दिखाई देने वाला देश, अम्बेडकर के संविधान सभा में किये गये सतत वैचारिक संघर्ष और उनके व्यापक दृष्टिकोण का नतीजा है, जो उनकी देश-रेख में बनाए गए संविधान में क्रियान्वित हुआ है, लेकिन फिर भी संविधान वैसा नहीं बन पाया जैसा अम्बेडकर चाहते थे, वह इस संविधान से खुश नहीं थे। आखिर अम्बेडकर आजाद भारत के लिए कैसा संविधान चाहते थे?

शिक्षा, रोजगार और आरक्षण

अम्बेडकर चाहते थे कि देश के हर बच्चे को एक समान, अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा मिले, चाहे वह किसी भी जाति, पंथ या वर्ग का क्यों न हो। वे संविधान में शिक्षा को मौलिक अधिकार बनवाना चाहते थे। देश की आधी से ज्यादा आबादी बदहाली, गरीबी और भुखमरी से जूझती अमानवीय जीवन जीने को अभिशप्त है। इस आबादी की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ही अम्बेडकर ने रोजगार के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाने की वकालत की थी। संविधान में मौलिक अधिकार न बन पाने के कारण आज भी करोड़ों लोग बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं।

बाबा साहब ने वंचित वर्गों के लिए शिक्षा और रोजगार में आरक्षण दिए जाने की वकालत की थी ताकि उन्हें दूसरों की तरह बराबरी के मौके मिल सकें। अगर शिक्षा, रोजगार और आवास को मौलिक अधिकार बना दिया जाता तो उन्हें आरक्षण की वकालत करने की शायद जरूरत ही न पड़ती।

डॉ. अम्बेडकर प्रजातांत्रिक सरकारों की कमी से परिचित थे, इसलिए उन्होंने साधारण कानून की बजाय संवैधानिक कानून को महत्त्व दिया है। वर्तमान में हम देख रहे हैं कि किस प्रकार सरकारें अपने स्वार्थ और वोट-बैंक के लिए कानूनों की मनमानी व्याख्या करना चाहती हैं, इसके लिए हम उत्तर प्रदेश में 'अतिपिछड़ों' और 'अतिदलितों' या आन्ध्र प्रदेश में मुस्लिम आरक्षण और मतांतरित ईसाइयों या मुसलमानों के लिए रंगनाथ कमीशन की रिपोर्ट को देख सकते हैं जो सरकारों के हिसाब से तय होती है।

मजदूर अधिकारों पर अम्बेडकर का मानना था कि *वर्ण व्यवस्था केवल श्रम का ही विभाजन नहीं है यह श्रमिकों* का भी विभाजन है। वंचितों को भी मजदूर वर्ग के रूप में एकत्रित होना चाहिए। मगर यह एकता मजदूरों के बीच जाति की खाई को मिटा कर ही हो सकती है। अम्बेडकर की यह सोच बेहद क्रांतिकारी है क्योंकि यह भरतीय समाज की सामाजिक संरचना की सही और वास्तविक समझ की ओर ले जाने की कोशिश है।

राजनीतिक सशक्तिकरण

अम्बेडकर वंचितों का राजनीतिक सशक्तिकरण चाहते थे। उसी का नतीजा है कि आज लोकसभा की 79 सीटें अनुसूचित जातियों के लिए और 41 सीटें अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित की गई हैं। सरकार ने संविधान संशोधन कर यह राजनीतिक आरक्षण 2026 तक कर दिया हैं शुरू में आरक्षण केवल 10 वर्ष के लिए था। यह राजनीतिक आरक्षण इन समूहों का कितना सशक्तिकरण कर पाया है, यह आज के समय का एक बड़ा सवाल है। अपना जनसमर्थन खो देने के डर से कोई भी राजनीतिक दल इस पर चर्चा नहीं करना चाहता।

देखा जाए तो दल-बदल कानून के रहते यह संभव ही नहीं है कि कोई वंचित वनवासी विधायक या सांसद अपनी मर्जी से वोट कर सके। हमने देखा है कि कुछ साल पहले लोकसभा में ऐसे सांसदों ने एक फोरम बनाया था, इन वर्गों के अधिकारों के लिए पार्टी लाइन से ऊपर उठकर। दल-बदल कानून के कारण वह बेअसर रहा है। अम्बेडकर दूरदर्शी नेता थे, उन्हें अहसास था कि इन समूहों को बराबरी का दर्जा पाने में बहुत समय लगेगा, वे यह भी जानते थे कि सिर्फ आरक्षण से सामाजिक न्याय सुनिश्चित नहीं किया जा सकता।

अम्बेडकर का पूरा जोर वंचित वर्गों में शिक्षा के प्रसार और राजनीतिक चेतना जगाने का रहा है। आरक्षण उनके लिए एक सीमाबद्ध योजना थी। दुर्भाग्य से आज उनके अनुयायी इन बातों को भुला चुके हैं। बड़ा सवाल यह है कि स्वतंत्रता के 67 सालों बाद भी अगर भारतीय समाज इन वंचित वनवासी समूहों को पूरी तरह आत्मसात नहीं कर पाया है, तो जरूरत है पूरे संवैधानिक प्रावधानों पर नई सोच के साथ देखने की, ताकि इन वर्गों को सामाजिक बराबरी के स्तर पर खड़ा

अगले पृष्ठ पर जारी है

उनका दृष्टिकोण न तो संकुचित था और न ही वे पक्षपाती थे। वंचितों को सशक्त करने और उन्हें शिक्षित करने का उनका अभियान एक तरह से हिन्दू समाज और राष्ट्र को सशक्त करने का अभियान था। उनके द्वारा उठाए गए सवाल जितने उस समय प्रासंगिक थे, वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, कि अगर समाज का एक बड़ा हिस्सा शक्तिहीन और अशिक्षित रहेगा तो हिन्दू समाज और राष्ट्र सशक्त कैसे हो सकता है?

thearyasamaj.org

नरेन्द्र मोदी जी बधाई के पात्र

भाषाई गुलामी से मुक्ति के संकेत

– प्रमोद भार्गव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकारी कार्य–संस्कृति बदलने में अद्भुत संकल्प शक्ति का परिचय दे रहे हैं। सबसे खास बात है कि वे थोथे उपदेश देने की बजाए बिना कोई ढिंढोरा पीटे काम करके दिखा रहे हैं। मोदी ने दुनिया के राजनेताओं के साथ और संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में बातचीत करने का निर्णय लिया है। हालांकि इसकी शुरुआत वे शपथ समारोह में भाग लेने भारत आए दक्षेस नेताओं से हिंदी में वार्तालाप करके कर चुके हैं। राष्ट्रभाषा की अस्मिता और संप्रभुता को स्थापित करने की मोदी ने जो शुरुआत की है, यह स्वाभिमान पिछले किसी प्रधानमंत्री ने इस तरह से प्रगट नहीं किया। इसी साल सितम्बर में अमेरिका में होने वाली संयुक्त राष्ट्र की बैठक को मोदी हिंदी में संबोधित करेंगे और अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा से जो द्विपक्षीय वार्ता होगी, उसे भी मोदी हिंदी में बातचीत करके ही आगे बढ़ाएंगे। जाहिर है, मोदी राजनयिक बैठकों में सैद्धांतिक रूप से हिंदी में बोलने की गौरवशाली परंपरा की बुनियाद रखते हैं तो वे ऐसा करने वाले पहले प्रधानमंत्री होंगे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के 66–67 सालों में हमने देश के राष्ट्रीय स्वाभिमान को भाषाई मोर्चे पर अकसर दरकते ही देखा है। यह पहला अवसर है जब एक राजनेता प्रधानमंत्री बनने के बाद उसी भाषा में काम करने को प्रयत्नशील है जिस भाषा में देश भर के वोटरों को संबोधित किया और उम्मीद से ज्यादा मत व समर्थन हासिल किया। भाजपा को मिले इस आशातीत स्पष्ट बहुमत के बाद भी यदि नौकरशाही के अंग्रेजी आतंक के आगे मोदी नतमस्तक हो जाते तो वे भी उसी रूढ़ परंपरा के शिकार माने जाते, जिसके कैदी अब तक सभी प्रधानमंत्री होते रहे हैं। सही अर्थो में मोदी की यह कोशिश नेहरूकालीन उस लौहकवच को भेदने की है जिसके प्रशासनिक ढांचे पर अंग्रेजी का आवरण चढ़ा हुआ है। मोदी ने राष्ट्रभाषा में वार्ता और कामकाज करने की प्रेरणा शायद गुजरात से ही निकले महात्मा गांधी से ली है, जिन्होंने आजादी के बाद सार्वजनिक घोषणा की थी कि 'लोगों से कह दो कि गांधी अंग्रेजी भूल गया है।'

हम चार अक्टूबर, 1977 को संयुक्त राष्ट्रसंघ की सभा में अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा हिंदी में दिए भाषण पर फूले नहीं समाते। लेकिन नहीं भूलना चाहिए कि यह भाषण पहले अंग्रेजी में लिखा गया था, जिसका हिंदी अनुवाद अटल जी ने पढ़ा था। एक अन्य पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव तो कई देशी–विदेशी भाषाओं के जानकार थे, लेकिन अंग्रेजी दासता से वे भी मुक्त नहीं दिखे। जाहिर है, हमारे ज्यादातर नेता अंग्रेजी को लेकर हीनताबोध से घिरे रहे हैं। अब मोदी ने उम्मीद जगाई है कि तिरंगा झंडा, राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत की तरह राष्ट्रभाषा भी वास्तविक अधिकार हासिल करेगी।

हमें नहीं भूलना चाहिए कि जिस अंग्रेजी को हम सिर पर ढोते फिरते हैं, उसे भी अपने देश ब्रिटेन में स्थापित करने के लिए अंग्रेजों को फ्रेंच और लैटिन भाषाओं की गुलामी से संघर्ष करना पड़ा था। अंग्रेज तो अपने मकसद में सफल हो गए थे, लेकिन हमने भाषाई दासता मंजूर कर ली। यह एक ऐसी मानसिक गुलामी है जो आजादी मिलने के 67 साल बाद भी हमारे यहां कायम है। अंग्रेजी की औपनिवेशिक विकृति इसलिए बनी रही क्योंकि हमने ब्रितानी प्रशासन तंत्र को उसकी प्रशासनिक भाषा अंग्रेजी के साथ स्वीकार लिया। लिहाजा इस ढांचे को तोड़े बिना न तो हिंदी अपनी जगह बना सकती है और न ही क्षेत्रीय भाषाएं व बोलिया प्रांतों में पूरी तरह स्थापित हो सकती हैं। अलबत्ता अंगेजी को जबरन प्रशासनिक भाषा के रूप में थोपे जाने के कारण हिंदी समेत संविधान की अनुसूची में शामिल 22 भाषाएं अपनी मूल जगह से विस्थापित हो रही हैं। ऐसे में

प्रशासनिक स्तर पर अगर हिंदी को स्थापित करने का वातावरण बनता है तो निश्चित रूप से यह हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए शुभ संकेत है।

यह बात बिल्कुल सही है कि फिलहाल हिंदी संविधान सम्मत राष्ट्रभाषा नहीं है। संविधान के अनुसार हिंदी देश की राजभाषा है। लेकिन इसका प्रचलन राष्ट्रभाषा के रूप में ही है। हालांकि इसे आजादी के बाद 15 साल के भीतर अंग्रेजी को विस्थापित कर सरकारी कामकाज की भाषा बन जाना चाहिए था, लेकिन हिंदी के साथ अंग्रेजी में भी कामकाज करने की जो छूट 14 सितम्बर 1949 को दी गई, उससे संवैधानिक संकल्प पारित हो जाने के बावजूद पीछा नहीं छूटा। बल्कि कालांतर में अंग्रेजी का दखल इतना बढ़ता चला गया कि हिंदी सरकारी कामकाज और व्यवहार के स्तर पर लगातार उपेक्षा का शिकार होती रही है।

सिनेमा, टीवी, विज्ञापन और टीवी पर ही प्रसारित होने वाली संगीत प्रतियोगिताओं ने जरूर हिंदी को अहिंदी भाषी दूरांचलों से जोड़ने में अहम भूमिका निभाई। 2014 के आम चुनाव में जहां मोदी ने देशभर में चुनावी सभाओं को हिंदी में संबोधित किया, वहीं तमिलनाडु में हिंदी के प्रखर व मुखर विरोधी रहे एम करुणानिधि की पार्टी डीएमके ने भी हिंदी में पोस्टर–बैनर लगाकर प्रचार किया। दरअसल, आर्थिक उदारवाद के दौरान बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपने जो प्रतिष्ठान अहिंदी प्रदेशों के महानगरों में लगाए हैं, उनमें बड़ी संख्या में हिंदीभाषी राज्यों के युवा भी काम कर रहे हैं, जो अब इन राज्यों में मतदाता भी हैं। इन्हीं मतदाताओं को लुभाने के लिए तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र व तेलंगाना में हिंदी में खूब प्रचार हुआ। जाहिर है, हिंदी की राजनीतिक स्वीकार्यता देशभर में बढ़ी है। इस स्वीकार्यता से यह संकेत भी मिलता है कि अब यदि हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के संवैधानिक प्रयास मोदी सरकार करती है तो खासतौर से तमिलनाडु में वैसा विरोध देखने में नहीं आएगा जैसा पहले देखने में आता रहा है। अलबत्ता यह भारतीय भाषाओं के समन्वय का दौर भी है। क्योंकि हिंदी क्षेत्र से जो युवा अहिंदी क्षेत्रों में काम करने पहुंचे हैं, वे वहां की स्थानीय भाषाएं भी सीख रहे हैं। तीर्थयात्रियों के लिए हिंदी पूरे देश में सनातन काल से बोलचाल की भाषा रही है और अब यही गुणात्मक पहल राजनीति और रोजगार के क्षेत्रों में भी हो रही है, जो हिंदी के फैलने व फलने–फूलने का शुभ लक्षण है।

वैश्विक होने के बावजूद हिंदी को विश्वभाषा इसलिए नहीं माना जाता क्योंकि वह संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा नहीं है। जबकि भाषा व बोली के रूप में प्रयोग किए जाने की दृष्टि से हिंदी विश्व में चीनी भाषा मंदारिन के बाद दूसरे स्थान पर है। दुनिया के 150 देशों में हिंदी का जीवन के बहुआयामी क्षेत्रों में इस्तेमाल हो रहा है। 93 देशों में हिंदी के अध्ययन–अध्यापन का काम भी हो रहा है। इस लिहाज से हिंदी अंतरराष्ट्रीय भाषा है। जाहिर है, भारत की जनसंख्या और अनिवासी भारतीयों की संख्या के लिहाज से हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषाओं में दूसरे स्थान पर है। बावजूद हिंदी को राष्ट्र संघ में स्थान नहीं मिल रहा तो केवल इसलिए कि भारत से ठोस पहल नहीं हो रही है। बहरहाल नरेंद्र मोदी ने हिंदी को पहले अपने ही देश में यथोचित सम्मान दिलाने की जो पहल की है, इसी पहल की सफलता हिंदी के लिए संयुक्त राष्ट्र में उपस्थिति का मार्ग खोलेगी।

– राष्ट्रीय सहारा से साभार

पिछले पृष्ठ का शेष

समरस समाज से सशक्त राष्ट्र

किया जा सके।

अम्बेडकर का मत था कि राष्ट्र व्यक्तियों से होता है, व्यक्ति के सुख और समृद्धि से राष्ट्र सुखी और समृद्ध बनता है। डॉ. अम्बेडकर के विचार से राष्ट्र एक भाव है, एक चेतना है, जिसका सबसे छोटा घटक व्यक्ति है और व्यक्ति को सुसंस्कृत तथा राष्ट्रीय जीवन से जुड़ा होना चाहिए। राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए अम्बेडकर व्यक्ति को प्रगति का केन्द्र बनाना चाहते थे। वह व्यक्ति को साध्य और राज्य को साधन मानते थे।

डॉ. अम्बेडकर ने इस देश की सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति का सही और साफ आकलन किया। उन्होंने कहा कि भारत में किसी भी आर्थिक राजनीतिक क्रांति से पहले एक सामाजिक सांस्कृतिक क्रांति की दरकार है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भी अपनी विचारधारा में 'अंत्योदय' की बात कही है। अंत्योदय यानी समाज की अंतिम सीढ़ी पर जो खड़ा हुआ है, सबसे पहले उसका उदय होना चाहिए। राष्ट्र को सशक्त और स्वावलंबी बनाने के लिए समाज की अंतिम सीढ़ी पर जो लोग हैं उनका सोशियो इकोनॉमिक डेवलपमेंट करना होगा। किसी भी राष्ट्र का विकास तभी अर्थपूर्ण हो सकता है जब भौतिक प्रगति के साथ-साथ आध्यात्मिक मूल्यों का भी संगम हो।

जहां तक भारत की विशेषता, भारत की संस्कृति का सवाल है तो यह विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। भारतीय संस्कृति को समृद्ध और श्रेष्ठ बनाने में सबसे बड़ा योगदान वंचित समाज के लोगों का है। इस देश में आदि कवि कहलाने का सम्मान केवल महर्षि वाल्मीकि को है, शास्त्रों के ज्ञाता का सम्मान वेदव्यास को है। भारतीय संविधान के निर्माण का श्रेय अम्बेडकर को जाता है। वर्तमान में कुछ देशी-विदेशी शक्तियां हमारी इन सामाजिक सांस्कृतिक धरोहरों को हिन्दुत्व से अलग करने की योजनाएं बना रही हैं। अब कुछ लोगों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। डॉ. अम्बेडकर ने मार्क्स के विचारों का विस्तार किया है। उन्होंने समाज परिवर्तन की मार्क्सिस्ट प्रणाली में कुछ नई बाते जोड़ी हैं। लेकिन ऐसा नहीं है, वे भूल जाते हैं कि मार्क्स का दर्शन केवल दो तीन सौ साल पहले का है। मार्क्स की पूंजीवादी व्यवस्था में जहां मुट्ठीभर धनपति शोषक की भूमिका में उभरते हैं वहीं जाति और नस्लभेद व्यवस्था में एक पूरा का पूरा समाज शोषक तो दूसरा शोषित के रूप में नजर आता है, जिसका समाधान अम्बेडकर सशक्त हिन्दू समाज में बताते हैं, क्योंकि वह जानते थे कि हिन्दू धर्म न तो इसे मानने वालों के लिए अफीम है और न ही यह किसी को अपनी जकड़न में लेता है। वस्तुत: यह मानव को पूर्ण स्वतंत्रता देने वाला है। यह चिरस्थायी विकास, संपन्नता तथा व्यक्ति व समाज को संपूर्णता प्रदान करने का एक साधन है।

शायद मार्क्सवादियों को एक भारतीय नायक की जरूरत है और अम्बेडकर से अच्छा नायक उन्हें कहां मिलेगा, इसलिए वह उनका पेटेंट करवाने में जुट गए हैं। डॉ. अम्बेडकर के पास भारतीय समाज का आंखों देखा अनुभव था, तीन हजार वर्षों की पीड़ा भी थी। इसलिए अम्बेडकर सही अर्थों में भारतीय समाज की उन गहरी वस्तुनिष्ठ सच्चाइयों को समझ पाते हैं जिन्हें कोई मार्क्सवादी नहीं समझ सकता।

अम्बेडकर का सपना था कि समतामूलक समाज हो, शोषण मुक्त समाज हो। दरअसल आज उनका यही सपना सबसे ज्यादा प्रासंगिक है और इसी के कारण अम्बेडकर भी सबसे ज्यादा प्रासंगिक हैं। उनके समूचे जीवन और चिंतन के केन्द्र में यही एक सपना है। एक जातिविहीन, वर्गविहीन, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषमताओं से मुक्त समाज। ऐसा समाज बनाने के लिए हिन्दू समाज का सशक्तिकरण सबसे पहली प्राथमिकता होगी। यही अम्बेडकर की सोच और संघर्ष का सार है। आज अम्बेडकर इस देश के संघर्षशील और परिवर्तनकारी समूहों के हर महत्त्वपूर्ण सवाल पर प्रासंगिक हैं इसी कारण वह विकास के लिए संघर्ष के प्रेरणास्रोत भी बन गए हैं।

आज हिन्दुत्व के सहारे ही समाज में एक जन-जागरण शुरू किया जा सकता है, जिसमें हिन्दू अपने सभी मतभेदों से ऊपर उठकर स्वयं को विराट अखंड हिन्दुस्थानी समाज के रूप में संगठित कर भारत को एक महान राष्ट्र बना सकते हैं।

– लेखक पूअर क्रिश्चियन लिबरेशन मूवमेंट के अध्यक्ष हैं

– पांचजन्य से साभार

एक अपील दानी महानुभावों से

आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जो देश तथा विदेश में आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा उद्देश्यों के प्रचार-प्रसार में निरन्तर संलग्न है तथा इसका मुख पत्र "वैदिक सार्वदेशिक" जो वैदिक संस्कृति के उद्घोष के साथ आर्य सामाजिक गतिविधियों को निरन्तर प्रसारित करने में प्राण-पण से लगा हुआ है उसके लिए तथा सार्वदेशिक सभा के कार्यों को विधिवत चलाने के लिए दो कम्प्यूटर प्रिंटर तथा स्कैनर की अत्यन्त आवश्यकता है। अत: दानी महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि वे आगे आयें तथा उपरोक्त आवश्यकता में अपना सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

– स्वामी अग्निवेश

thearyasamaj.org

मासूम गिरोहों की दिल्ली

...गतांक से आगे

– प्रियंका दुबे

ड्रग पैडलर्स गैंग :- नशा बच्चों को अपराध की दुनिया में धकेलने का सबसे आसान तरीका रहा है। अपनी तहकीकात के दौरान तहलका की टीम ऐसे दर्जनों बच्चों से मिली जो नशे के लिए चोरी और डकैती से लेकर हत्या तक की कोशिशों को अंजाम दे चुके हैं। हम इस दौरान 17 वर्षीय सौरभ से मिले जो अभी एक नशा मुक्ति केन्द्र में हैं, सौरभ एक आपराधिक गिरोह और नशे के चंगुल में फंसकर पैसे और नशे के लिए हिंसा की हर सीमा लांघ जाता है। 16 वर्षीय शाहबाज नशे में और नशे के लिए अपने और दूसरों के घरों में चोरियां करता था।

दिल्ली के तमाम इलाके ऐसे अपराधियों से पटे पड़े हैं जो पहले तो मुफ्त का नशा मुहैया कराते हैं फिर मासूम बच्चों को इसकी लत लगवाकर उसी नशे के लिए उनसे अपराध करवाते हैं, एक बार नशे की लत लग जाने के बाद ये बच्चे नशे की खुराक के लिए खुद ही चोरियां करना शुरू कर देते हैं, इसके बाद इनमें से कई बच्चे खुद भी नशा बेचने वाले नेटवर्क में शामिल होकर वही सब करने लग जाते हैं जो उनके साथ किया गया था, सड़कों, चौराहों और स्टेशनों पर रहने वाले बेघर बच्चों के साथ-साथ नशे के व्यवसाय में शामिल आपराधिक गिराहों ने कई सामान्य परिवारों के स्कूल जाने वाले बच्चों की भी जिंदगियां चौपट की है।

राजधानी के किशनगढ़ इलाके में स्थित एक नशा मुक्ति केन्द्र में हमारी मुलाकात सौरभ से होती है। सौरभ उन बच्चों में से नहीं है जो गरीबी, भुखमरी और पारिवारिक समस्याओं के चलते नशे के दुष्चक्र में फंस जाते हैं, वह माता-पिता के साथ जहांगीरपुरी के अपने छोटे से घर में रहता था और रोज स्कूल भी जाता था, लेकिन उसके मोहल्ले में ड्रग्स का धंधा करने वाले अपराधियों ने उसे चोरी, डकैती और हिंसा के दलदल में धकेल दिया, तहलका से बातचीत में वह बताता है, मुझे सबसे पहले नशा मेरे स्कूल के ही लड़कों ने दिया था। पहले हम लोग गुटका और सिगरेट ही लेते थे, फिर उन्होंने मुझे स्मैक दिया। कुछ ही दिनों में मुझे इतनी आदत हो गई कि मैं सबसे ज्यादा स्मैक लेने लगा। फिर धीरे-धीरे उस गिरोह तक पहुंच गया जो हमारे एरिया में स्मैक बंटवाता था। पहले तो उन्होंने फ्री में दिया बाद में घर से पैसे चोरी करके नशा खरीदना पड़ा। फिर जब घर में सबको पता चल गया तो मैंने घर ही छोड़ दिया और बाहर चोरियां करने लगा।' वह आगे कहता है, मैं उन्हें चोरियां करके सामान देता और वे मुझे नशा देते, फिर धीरे-धीरे मैंने इंजेक्शन लेना भी शुरू कर दिया। नशे के लिए मैं इतना पागल हो जाता था कि कई बार फ्लाई-ओवर पर गाड़ियों को रोककर उनका सामान चुरा लेता। कई बार मैंने लोगों को फ्लाई-ओवर से नीचे भी फेंका है। मैं नशे के लिए कुछ भी कर सकता था।

सौरभ की ही तरह मध्यवर्गीय परिवारों के स्कूल जाने वाले विनय और योगेन्द्र भी अपने मोहल्लों में मौजूद स्थानीय गिराहों के संपर्क में आकर चोरियां और मारपीट करने लगे थे। 'मैं सुबह उठता था और नशो ढूंढ़ने लगता था, अगर स्मैक या सुई नहीं होती तो कहीं से भी पैसे का जुगाड़ करके अपने गिरोह के लड़कों के पास जाता और खरीदता, मुझे हर रोज 400-400 रुपये की तीन खुराकें चाहिए होती थीं, यानी एक दिन में कुल 1200 रुपये का नशा, हमारे मोहल्ले में लड़कों का एक गिरोह था जो नशा करता और बेचता भी था, शुरू में उन्होंने मुझे मुफ्त में नशा दिया फिर बाद में मुझसे अपने फायदे के लिए चोरियां करवाने लगे, इसके बाद मैंने उनका साथ छोड़ दिया और खुद ही चोरी करके नशा खरीदने लगा, मैंने नशे के लिए अपने घर का गैस का सिलेंडर तक बेच दिया था जिसके बाद मेरे घरवालों ने मुझे घर से निकाल दिया। मैं सड़क पर रहकर ही चोरियां करता और नशा खरीदता।

मुफ्त में नशा बांटकर छोटे बच्चों को अपने आपराधिक गिराहों में शामिल करने वाले अपराधी गिराहों के लिए सड़कों पर रहने वाले बेघर बच्चों को अपना निशाना बनाना बेहद आसान होता है। राजधानी के चांदनी चौक मेट्रो स्टेशन के पीछे हमारी मुलाकात नशे के इस गोरखधंधे में फंसे लगभग दर्जन भर बच्चों से होती है। चांदनी चौक के मुख्य बाजारों की सड़कों पर रहने वाले ये बच्चे तहलका को नशे के इस व्यापार की बारीकियां तफसील से बताते हैं। 15 वर्षीय असलम पिछले चार साल से लगातार नशा करने की वजह से 12 साल के एक कमजोर और कुपोषित बच्चे की तरह दिखाई देता है। अपनी नशे की आदतों और इलाके में नशे के व्यवसाय के बारे में बताते हुए कहता है, मैं एक दिन में लगभग 20 फ्लूइड पी जाता हूं। यहां पर होने वाले सारे बच्चे नशा करते

हैं, लड़के-लड़कियां सब, नशा हमें सड़कों पर ही रहने वाले बड़े लड़कों ने दिया था, पहले तो ऐसे ही, बिना पैसे के दे देते थे, फिर हमें नशे के लिए चोरियां करनी पड़ती थी, कभी-कभी हम पुराना सामान बेच कर भी पैसे इकट्ठा करते और फिर अपने यहां के गैंग वाले लड़कों से नशा मांगते, यमुना मार्केट के पेटी बाजार से, निजामुद्दीन की दरगाह से और लाल किले के पीछे वाले मीना बाजार से भी आसानी से नशा मिल जाता है। वहां लड़के होते हैं हमारी पहचान के।

नशे की लत लगवाकर बच्चों को अपराध में घसीट रहे इन आपराधिक गिराहों और नशे की लत से जूझ रहे बच्चों के साथ लंबे समय से काम कर रहे सोसाइटी फॉर प्रमोशन ऑफ यूथ एंड मासेस के निदेशक डॉ. राजेश कुमार इन गिरोहों को सरकारी व्यवस्था के पूरी तरह असफल होने का नतीजा बताते हुए कहते हैं, 'अगर 14 साल से कम उम्र के इतने सारे बच्चे सड़कों पर नशा कर रहे हैं तो इससे साफ समझ में आता है कि हमारा शिक्षा के अधिकार से जुड़ा कानून कितनी बुरी तरह असफल है। हम इतनी कोशिश करते हैं, लेकिन स्कूल इन बच्चों को लेना ही नहीं चाहते। कोई सड़कों पर नशे में धुत बच्चों के लिए कुछ नहीं करना चाहता और देखते ही देखते वे कब बड़े अपराधी बन जाते हैं, उन्हें भी पता नहीं चलता, जब तक हम उन्हें मुख्यधारा से नहीं जोड़ेंगे तब तक कुछ भी नहीं बदलेगा, और कोई भी उन्हें मुख्यधारा में नहीं देखना चाहता, प्रशासन, पुलिस और सरकार सबको यही अच्छा लगता है कि सड़क के बच्चे सड़कों पर ही रहें।

दिल्ली की बाल कल्याण समिति के पूर्व अध्यक्ष राज मंगल प्रसाद का मानना है कि अगर हम अपराध की दुनिया का हिस्सा बन चुके या बनने जा रहे बच्चों के लिए कुछ करना चाहते हैं तो किशोरों के इन गिरोहों के अस्तित्व को स्वीकारने से ही हमें शुरुआत करनी होगी, वे कहते हैं, 'दिक्कत यह है कि पुलिस यह मानती ही नहीं कि वयस्क अपराधी बच्चों को बहला-फुसला कर उन्हें अपराध की दुनिया में धकेल रहे हैं। इस प्रक्रिया में बच्चों के कुछ नए गिरोह पनप रहे हैं और राजधानी में सक्रिय हैं। अपने कार्यकाल के दौरान मुझे तो यहां तक पता चला कि खुद माता-पिता भी अपने बच्चें को चोरी-डकैती जैसे अपराधों में धकेल रहे हैं। अपराध के दलदल में फंस रहे इन सैकड़ों बच्चों के जीवन को बचाने के लिए जरूरी है कि सबसे पहले पुलिस इन्हें सड़क पर घूम रहे बच्चों के बजाय आपराधिक गिरोहों में फंसे बच्चों के तौर पर स्वीकार करे और इनका जीवन बर्बाद कर रहे वयस्कों को पकड़े।'

किशोरों के लिए बनाई गई दिल्ली पुलिस की विशेष इकाई का लंबे समय तक नेतृत्व करने वाले राजधानी के वर्तमान विशेष आयुक्त सुधीर यादव से बात करने पर राज मंगल प्रसाद की बात सही लगने लगती है। वे बच्चों के ऐसे आपराधिक गिरोहों के संगठित अस्तित्व को नकारते हुए से कहते हैं, 'यह बात सही है कि बच्चों के ऐसे कुछ गिरोह सक्रिय हैं, लेकिन इस अवस्था में उन्हें संगठित नहीं कहा जा सकता, इनकी गतिविधियां छिटपुट और बिखरी हुई हैं। क्षेत्र में पहले से सक्रिय वयस्क अपराधी इन बच्चों को सिर्फ अपने प्यादों की तरह इस्तेमाल करते हैं। उन्हें भी यह मालूम होता है कि अगर ये बच्चे पकड़े भी गए तो भी किशोर न्याय अधिनियम की वजह से आसानी से छूट जायेंगे, इसलिए वयस्क गिरोह और कई मामलों में तो माता-पिता भी बच्चों को अपराधों में धकेल देते हैं। दिल्ली हाई कोर्ट ने भी बच्चों के इस बढ़ते अपराधीकरण को संज्ञान में लेते हुए निर्देश जारी किए थे और हमने भी इस दिशा में प्रयास करना शुरू कर दिया है। हम 'युवा' नामक योजना के तहत ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में फंसे बच्चों के बचाने और उनके पुनर्वास के लिए विशेष प्रयास कर रहे हैं।'

दिल्ली सरकार के महिला और बाल विकास विभाग के सहायक निदेशक पी-खाखा कहते हैं, यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि कोर्ट के सख्त निर्देशों के बाद भी पुलिस इस मामले में गंभीर नहीं है और ऐसे मामलों की गहन पड़ताल कर बच्चों को अपराध में धकेल रहे वयस्क अपराधियों की धर-पकड़ पर ध्यान नहीं दे रही है, जब तक हम बच्चों के खो जाने की स्थिति में उन्हें शुरुआती 24 घंटे में ही बरामद कर सुरक्षित होम में नहीं डालेंगे, दूसरे राज्यों से आने वाले बच्चों का सही-सही आंकड़ा इकट्ठा कर प्रतिकूल परिस्थितियों में फंसे बच्चों का पुर्नवास नहीं करेंगे तब तक शहरों में पहले से मौजूद अपराधी उन्हें ऐसे ही अपना निशाना बनाते रहेंगे और इस तरह खुद हिंसा और शोषण के शिकार इन बच्चों के नए आपराधिक गिरोह पनपते रहेंगे। (सभी बच्चों के नाम बदल दिए गये हैं।)

– *तहलका से साभार*

" पॉल्ट्री फार्म से दर्जन भर बाल एवं बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराया"

आज बीच की दो सदियां गुज़र जाने के बाद भी हमारे समाज के एक बड़े हिस्से के लिए स्वतंत्रता एवं मुक्ति एक स्वप्न ही है। यह स्वप्न अंतिम रूप से कब साकार हो सकेगा और ऐसा समाज हम कब बना सकेंगे जिसमें कोई किसी का दास और बंधुआ न हो, यह तो नहीं कहा जा सकता किंतु इस दिशा में सोचने व संघर्ष करने वाले व्यक्ति एवं संगठन हमें आशा बंधाते हैं कि कभी न कभी यह लड़ाई अंतिम रूप से जीत ली जाएगी। बंधुआ मुक्ति मोर्चा भी एक ऐसा ही संगठन है जो विगत तीन दशक से अधिक समय से समाज के आख़िरी पायदान पर खड़े और दासता का जीवन जीने को मजबूर लोगों के लिए आज़ादी और पुनर्वास का कार्य कर रहा है। 34 वर्षों के दौरान देशभर में बंधुआ मुक्ति मोर्चा ने एक लाख छिहत्तर हज़ार से अधिक बंधुआ मज़दूरों को रिहा करवा कर मुक्ति व पुनर्वास की राह प्रदान की है।

इसी कड़ी में एक नया उदाहरण है कि पिछले दिनों पानीपत (हरियाणा) के एक पॉल्ट्री फार्म से एक दर्जन भर बंधुआ मज़दूरों को आज़ाद कराया गया और मुक्ति प्रमाण–पत्र के साथ उन्हें उनके पुनर्वास स्थल तक पहुंचाने की व्यवस्था की जा रही है।

घटनाक्रम कुछ इस प्रकार है कि दिनांक 13 जून, 2014 को बंधुआ मुक्ति मोर्चा को जानकारी मिली कि पानीपत के गांव नोल्था में शिव पॉल्ट्री फार्म में दर्जन भर लोगों (जिनमें अधिकांश बच्चे हैं) को बंधुआ मज़दूर बनाकर रखा गया है। जानकारी मिलते ही संस्था की ओर से डीसी पानीपत को फैक्स द्वारा इसकी सूचना दी गई। पानीपत ज़िला प्रशासन ने सहयोग का रुख़ अपनाया और बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यकारी निदेशक निर्मल गोराना के साथ मिलकर 14 जून, 2014 की सुबह पॉल्ट्री फार्म पर छापा मारा। मौक़े पर बच्चे काम करते पाए गए तथा पूछे जाने पर उन्होंने स्पष्ट बताया कि मालिक और ठेकेदार मिलकर उनसे ज़बरदस्ती काम लेते है, मार पिटाई करते हैं और उन्हें वापस घर जाने से रोकते है। साथ ही यह जानकारी भी मिली कि इन बच्चों को 'मानव तस्करी' के जरिये मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल और नेपाल से अच्छी कमाई का झांसा देकर लाया गया था तथा इनमें एक महिला भी है। बंधुआ मज़दूरों को पाल्ट्री फार्म से मुक्त करा लिया गया और 15 जून, 2014 की शाम तक उन्हें मुक्ति प्रमाण पत्र के साथ पुलिस सुरक्षा में बंधुआ मुक्ति मोर्चा के केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली भेज दिया गया।

इस प्रक्रिया के दौरान निर्मल गोराना ने प्रशासन से अपराधियों–मालिक (अजीत जागलन) ठेकेदार (रंजीत और किशन) तथा सुपरवाइजर बिंदाज के ख़िलाफ़ क्रिमिनल लॉ के सेक्शन 370, बंधुआ मज़दूरी अधिनियम, बाल मज़दूरी उन्मूलन अधिनियम, इंटर स्टेट माइग्रेन्ट वर्कमैन एक्ट, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति अधिनियम के तहत कड़ी से कड़ी कानूनी कार्यवाई की मांग की है।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा की ओर से सभी मुक्त बंधुआ एवं बाल मजदूरों को उनके निवास स्थान पर सुरक्षित रूप से भेजा जायेगा साथ ही उनके पुनर्वास में सहयोग प्रदान किया जायेगा जिससे बाल एवं बंधुआ मजदूरों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके।

निर्मल गोराना, कार्यवाहक निदेशक–बंधुआ मुक्ति मोर्चा

thearyasamaj.org

पृष्ठ–3 का शेष

दान

लोगों ने दूसरों की उदारता व दान धर्म का लाभ लेने के लिए इसे अपना जीवनमंत्र बना लिया, तो क्या किया जाए। वैसे यह सभी जानते हैं कि कीट पतंग भले ही तनख्वाह वाली चाकीर नहीं करते पर दिनभर भोजन खोजने का श्रम तो करते ही हैं तभी दाता राम उन्हें भोजन देते हैं। दूसरों के दान से पेट भरने की और खुद कुछ न करने की जड़ता देखकर आम आदमी का दान देने को मन ही नहीं करता इसलिए पात्र को ही दान करने का आग्रह किया जाता है।

दान सामाजिक क्षमता बढ़ाने में सहायक – धनी और निर्धन वर्ग के बीच विषमता की खाई या दूरी सदैव से रहती आई है। धनी वर्ग टैक्स के माध्यम से अपना धन गरीब को देने का विरोध करेगा पर यदि उसे पुण्य होने का आश्वासन दिया जाए तो वह दान करने को तैयार हो जाता है। पुण्य एक तरह का बैंक एकाउण्ट है जिसमें दान जमा हो जाता है और 'तुम एक पैसा दोगे वह दस लाख देगा' की तर्ज पर काम करता है। धर्मशास्त्र वस्तुतः सामाजिक आचार व्यवहार में समता व न्याय के उद्देश्य से ही बने हैं इसलिए दान की महिमा बताकर सामाजिक विषमता को कम करने का प्रयास इसमें रहता है। इसलिए दान को अहंकार रहित होकर करने पर भी जोर है।

ऐसी देनी देन ज्यूं, कित सीखे हो सैन,
ज्यों ज्यों कर ऊँच्यो करो, त्यों-त्यों निचे नैन।
देनेहारा कोई और है, भेजत सो दिन रैन,
लोग भरम हम पर करें, तासो नीचे नैन॥

जैसा कि हर व्यवस्था की मूल भावना के साथ होता है, कालान्तर में इस भावना की उपेक्षा होने लगती है। हम देखते है कि फल बांटने के चित्र अखबारों में छपते हैं जो दान लेने वाले के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाते हैं और दानदाता के अहं को बढ़ाते हैं तो आइये! हम भी विनम्रता से दान करने को अपनी आदत बनाएं।

– 269 जीवाजी नगर, ठाठीपुर ग्वालियर-474011

सत्यार्थ सौरभ से साभार

आर्य समाज हुतात्मा नगर बसवकल्याण, जिला बीदर में हुतात्मा धर्म प्रकाश जी का 76वां बलिदान स्मृति दिवस

आप सभी राष्ट्र प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी आर्य समाज बसवकल्याण की ओर से दिनांक 27 जून, 2014 शुक्रवार को हुतात्मा धर्म प्रकाश जी का 76वां बलिदान दिवस मनाया जा रहा है। इस पावन अवसर पर आर्य जगत के विद्वान, मुनी, भजनोपदेशक एवं नेतागण पधार रहे हैं और इस समारोह के केन्द्र बिन्दू नव निर्वाचित लोकसभा सदस्य बीदर माननीय श्री भगवंतराव जी खूबा इनका सत्कार समारम्भ आर्य समाज बसवकल्याण, आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक एवं विविध आर्य समाजों की ओर से सम्मान किया जायेगा। अतः आपसे सानुरोध है कि आप अधिक संख्या में पधारकर समारोह की शोभा बढ़ाकर धर्म का काम कर पुण्य के भागी बनें। **स्थान : आर्य समाज मंदिर, हुतात्मा नगर बसवकल्याण, जिला-बीदर।**

' श्री भानू प्रसाद पाण्डे, मंत्री

बहुरेंगे भारतीय भाषाओं के दिन

हिन्दी को सत्ता के गलियारों में अहमियत मिलने के साथ-साथ दूसरी भारतीय भाषाओं के भी दिन बहुरने वाले हैं। उत्कृष्ट भारतीय साहित्य को विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने के लिए सरकार राष्ट्रीय ई-भाषा मिशन शुरू करेगी।

राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने सोमवार को संसद के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करते हुए इसका ऐलान किया। मुखर्जी ने कहा कि हमारे विविधता भरे राष्ट्र की एकता की बुनियाद हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। भारतीय भाषाएं समृद्ध साहित्य, इतिहास, संस्कृति, कला और अन्य उपलब्धियों से भरी हैं। इसलिए सरकार राष्ट्रीय ई-भाषा मिशन लांच करेगी जिसके तहत क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल कंटेंट तैयार कर विभिन्न भाषाओं में अपने उत्कृष्ट साहित्य का प्रसार किया जायेगा।

सरकार की घोषणा इसलिए भी अहम है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हिन्दी को खासा महत्त्व दिया है। चुनाव प्रचार के और प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी हिन्दी में ही भाषण देते रहे हैं। बताया जाता है कि दक्षेस राष्ट्र के नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकों में भी उन्होंने हिन्दी में बात की।

राष्ट्रपति ने कहा कि सरकार राष्ट्रीय विरासतों के संरक्षण और रख-रखाव के लिए जरूरी संसाधन भी उपलब्ध करायेगी। राष्ट्रपति ने पर्यटन को बढ़ावा देने को सरकार की योजना का जिक करते हुए कहा कि सरकार 50 पर्यटन सर्किट विकसित करने के लिए एक परियोजना शुरू करेगी। सरकार धार्मिक यात्राओं से जुड़े पर्यटन को भी बढ़ावा देगी। इसके लिए सभी धर्मों से जुड़े तीर्थस्थलों के आसपास बुनियादी सुविधाएं तथा ढांचागत सुविधाओं को सुधारने और सौंदर्यीकरण के लिए राष्ट्रीय मिशन शुरू किया जायेगा।

– जागरण से साभार

सावधान ! **सावधान !!** **सावधान !!!**

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि ''हाँ'' तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

NDPSo on 20/21 जून, 2014
प्रकाशन की तिथि : 19 जून, 2014
वैदिक सार्वदेशिक 19 से 25 जून, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

Press Statement By Swami Agnivesh On IB Report

New Delhi, 14th June, 2014

The Intelligence Bureau IB has discredited itself by submitting a half baked laughable report on NGO's foreign funding and the consequent acts of "economic terrorism" indulged by them. The top confidential classified report though submitted to PM Narendra Modi has been cleverly and selectively leaked to some media persons. The Indian Express which started the leak -out series found three days later that the report starts with a plagiarized speech of Narendra Modi the then CM of Gujrat in 2006.

The report seems to have been prepared earlier to please the then UPA bosses and has now been atapulted with the Modi speech to please the new bosses in Raisina Hills.

I urge the Prime Minister Narendra Modi to make this IB report fully public, order IB to substantiate specific charges to register FIR, the CBI to further investigate and frame charges under economic terrorism and proceed thoroughly with full transparency. If, on the other hand the IB report is found baseless, flimsy and meant for witch hunting the Civil Society, and only to throttle the voices of the civil society, the PM should order drastic action against the IB top brass involved in this type of a sordid exercise and call their bluff. It may be interesting to find out how many of the present IB top officials are related to the earlier UPA political leaders and really how much intelligence is actually left there in the IB.

The recent unintelligent expose has done much to tarnish the reputation of some of the well-known NGO's like The Green Peace of India, PUCL, INSAAF, NBA etc. It is heartening to see that they have offered to fully cooperate with fair investigation.

But should not the high decibel media be restrained from to conducting media trial based on this "intelligently leaked" report of the Intelligence Bureau? And if this report is a figment of some media houses imagination or cannot be substantiated through proper evidence, strict legal action must be initiated against such culprits.

मानवीय सर्वांगीण विकास एवं आत्मज्ञान शिविर

शिविर स्थल :– अग्निलोक, ग्राम–बहलपा, तहसील–सोहना, जिला–गुड़गांव (हरि.)

दिनांक : 1 से 6 जुलाई, 2014

मनुष्य का शरीर ईश्वर की ऐसी अद्भुत रचना है जिसमें आत्मा के साथ सामाजिक उन्नति करने वाली शक्तियाँ भी निहित हैं जो समुचित वातावरण न मिलने के कारण सुप्त प्रायः रहती हैं। जिसके कारण समाज में विभिन्न प्रकार की अमर्यादित शक्तियाँ सक्रिय हो जाती हैं और समाजसेवी लोग चाहते हुए भी उनसे समाज को मुक्त नहीं करा पाते।

इसी तथ्य को ध्यान में रखकर ऋषियों मुनियों एवं वेदों की बताई पद्धति को अपनाकर सच्चरित्र मनुष्यों के भीतर सोई उस सत्यानुगामिनी बलवती शक्ति को जागृत करने के उद्देश्य से शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें ध्यान–साधना एवं आध्यात्मिक ज्ञान के साथ मानव की आन्तरिक क्षमता एवं योग्यता को जागृत करने वाले प्रेरक प्रस्तुत किये जायेंगे। जिसमें शिविरार्थी अपनी योग्यता और क्षमता को समझकर उसे समाज के उत्थान में लगा सकेगें।

प्रथम शिविर 1 जुलाई, 2014 से 6 जुलाई, 2014 तक आयोजित किया जा रहा है। तत्पश्चात् भी निरन्तर शिविर लगेंगे जिनकी तिथियों की सूचना शिविरार्थियों को पत्र अथवा ईमेल द्वारा दे दी जायेगी।

शिविरार्थी महानुभाव को 1 जुलाई को अपरान्ह 3 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचना होगा। इस शिविर में आवास एवं भोजन की व्यवस्था निःशुल्क होगी। इसमें संख्या सीमित है अतः शिविर में भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति शीघ्र सम्पर्क करें।

आपके आवेदन के अनुसार आपको शिविर सम्बन्धी और मार्ग सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी शीघ्र प्रदान कर दी जायेगी।

विशेष – शिविर की समयावधि तक सभी शिविरार्थियों को दिन–रात (महिला शिविरार्थिनियों के लिये समुचित आवास व्यवस्था अलग होगी) सम्पूर्ण समय शिविर स्थल पर ही रहना होगा।

आयोजक
स्वामी अग्निवेश
ईमेलः agnivesh70@gmail.com

प्रशिक्षक
डा० ओमदत्त आचार्य
info@vishvamaryam.com
मो. 09654064998

प्रतिष्ठा में :–

श्री मन्त्री. जा
निधि स..

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा कर्मचारी श्री माधो सिंह को पत्नी शोक

सार्वदेशिक सभा के कर्मचारी श्री माधो सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती भारती देवी का दिनांक 14 जून को डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, दिल्ली में उपचार के दौरान लगभग 55 वर्ष की आयु में असमय निधन हो गया। वे अपने पीछे एक विवाहित पुत्री एवं एक विवाहित पुत्र का भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनके निधन पर सार्वदेशिक सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गहरा दुःख एवं संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति एवं उनके परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

वैदिक सार्वदेशिक 24 मई से 1 जून का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका हर बार की तरह बहुत अच्छी लगी। असल में वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका में उच्च कोटि का मानसिक भोजन परोसा जाता है। देवेन्द्र शर्मा द्वारा लिखा लेख "किसानों की सुध ले सरकार" वास्तव में किसानों की दुर्दशा को दिखाते हुए उनकी समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित कर रहा है तथा "मासूम गिरोहों की दिल्ली" में मासूम बच्चों के अपराधी बनने की यथार्थ दास्तान ह्दय विदारक है। सरकार सब कुछ जानते समझते हुए भी इस अपराध की फैक्ट्री को बन्द करवाने में कोई दिलचस्पी नहीं ले रही। यह हमारे समाज के नैतिक पतन को दर्शाने के लिए पर्याप्त है। सरकार को इस प्रकार की बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

–राजीव लोचन भटनागर, प्रीत विहार, दिल्ली

वैदिक सार्वदेशिक का प्रत्येक अंक व प्रत्येक लेख खोजपरक सम्पूर्ण होता है। इस प्रकार की पत्रिका निकालने के लिए आपका धन्यवाद करना चाहता हूं। इस पत्रिका में सम-सामयिक मुद्दों के साथ-साथ दलितों, आदिवासियों तथा महिलाओं से जुड़े सरोकारों को प्रमुखता से उठाया जाता है। पत्रिका अपने लेखों के माध्यम से समाज को संदेश पहुंचाने में पूरी तरह सफल है। विश्वास है कि भविष्य में भी यह हाशिये पर रह रहे लोगों की आवाज को बुलन्द करती रहेगी।

– प्रभु दयाल सचदेव, लोनी (उ. प्र.)

घर-घर में सत्यार्थ प्रकाश पहुँचाने का सुनहरा अवसर
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा
एक बार फिर नये कलेवर में प्रकाशित
महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ
सत्यार्थप्रकाश
मूल्य : 80 रुपये
आकर्षक एवं सुन्दर बहुरंगी आवरण तथा बढ़िया कागज
23X36 के 16वें साईज में 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध है।
प्राप्ति स्थान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।